Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

राजनीतिक विचारधारा : वैदिक काल से गुप्त काल तक एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 रविन्द्र कुमार
एम.ए., पीएच.डी. (राजनीति विज्ञान) बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

भारत का अतीत बड़ा गौरवमय रहा है। आर्यों का यह देश वैदिक काल से गुप्त काल तक आर्य सभ्यता का अक्षुण्ण गढ़ बना रहा। इस अवधि के विभिन्न ग्रन्थ, मुद्राएँ, शिलालेख, ताम्रपत्र आदि के शोधों से यह स्पष्ट हो चुका है कि प्राचीन भारत में उच्च विकसित सभ्यता विद्यमान थी। आध्यात्मिक, नैतिक, दर्शन आदि क्षेत्र की वैचारिक पराकाष्ठा के साथ भारत की शासन–संस्थाओं एवं राजनीतिक सिद्धांत उस समय उत्कृष्टतम रूप में विकसित थे। प्राचीन भारत के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में विकसित थे। प्राचीन भारत के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में विभिन्न समयों में अलग–अलग भाँति का शासन कायम रहा एवं विकसित भी होता रहा। सिकन्दर के समय आये ग्रीक लेखकों ने अपने ग्रन्थों में भारत के अनेक जनपदों का उल्लेख किया है। उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया कि यूनान के स्पार्टा एवं मेसिडोनिया के समान ही भारत में अनेक गणराज्य विद्यमान हैं। पाणिनी ने अपने 'अष्टाध्यायी' में आयुधजीवी संघ (स्पार्टा) के समान) तथा अन्य जनपदों का उल्लेख किया है। इस तरह का विशद वर्णन संहिताओं (वेद), उपनिषद, अरण्यक, पुराण, महाकाव्य (रामायण एवं महाभारत), शुक्रनीति सार, बौद्ध एवं जैन साहित्य कौटिलीय अर्थशास्त्र, संस्कृत नाटक एवं लेख, विदेशी लेख, यात्रा विवरण में उपलब्ध है।

प्राचीन भारतीय राजशास्त्र का उद्‌भव स्थल ऋग्वेद है। वैदिक सभ्यता के आरंभिक काल में ही प्राचीन आर्यों के राजनीतिक और प्रशासनिक संगठन के ढाँचे का विकास हो गया था। ऋग्वेद और उसके उत्तरवर्त्ती वैदिक रचनाओं के सामग्रियों के आधार पर यह कहना उपयुक्त प्रतीत होता है कि उस युग में विकसित राजनीति और प्रशासनिक संगठनों का विकास हो चुका था। वैदिक युग में सुदृढ़ लोक योगक्षेम अर्थात् प्रजाहितकारी प्रशासन की स्थापना हो चुकी थी। ऋग्वेद में विविध विषयों पर अनेक ऋषियों के विचार मुक्तक ऋचाओं में दिये हुए हैं। विषय की दृष्टि से इन ऋचाओं में परस्पर कोई संबंध नहीं है। प्रत्येक ऋचा स्वतंत्र और स्वयं में पूर्ण है। इसलिए ऋग्वेद में किसी भी विषय का क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त नहीं किया जा सकता। राजशास्त्र विषयक ऋचाएँ, संपूर्ण ग्रंथ में यत्र–तत्र मुक्त छन्दों के रूप में बिखरी

हुई हैं। इन ऋचाओं में भी राजशास्त्र का विषय का स्पष्ट वर्णन कहीं भी प्राप्त नहीं है। इन ऋचाओं की राजशास्त्र संबंधी सामग्री में कतिपय सिद्धांतों की ओर संकेत मात्र किय गये हैं। इन संकेतों के आधार पर प्राचीन भारतीय राजशास्त्र के स्पष्ट स्वरूप की स्थापना नहीं की जा सकती है जो अन्य तीन संहिताओं के विषय में भी यही कहना उचित होगा।

प्राचीन भारत में राजनीतिक कथा–वस्तुओं की जानकारी हेतु कौटिल्य का अर्थशास्त्र प्रमुख स्रोत है। प्राचीन भारत की राजनीति के स्वरूप के विषय में पाश्चात्य विद्वानों की बड़ी भ्रामक धारणा रही है। इसका एक प्रमुख कारण यह था कि वे भारत के प्राचीन साहित्य में से राजशास्त्र पर पृथक ग्रन्थ ढूँढ़ने लगे, जबकि स्थिति इससे सर्वथा भिन्न थी। नीतिशास्त्र अथवा राजशास्त्र (राजधर्म) उस सार्वभौमिक और व्यापक धर्म का अंश था जो व्यक्ति, समाज और राज्य, सभी के कार्य–कलापों का नियमन करता था। बीसवीं सदी के आरंभ में कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र के प्रकाशन के पश्चात् यह भी प्रमाणित हो चुका है कि भारत में राजनीति अध्ययन का एक विशेष विषय था और उस पर अनेक स्वतंत्र ग्रंथ लिखे गये थे। इसमें भारत के राजशास्त्रियों में कौटिल्य का स्थान सबसे ऊँचा है और उसे शासन कला तथा कूटनीति का सबसे महान प्रतिपादक माना जाता है।

भारतीय कौटिल्य को पारंगत राजनीतिज्ञ तथा मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के प्रख्यात मंत्री के रूप में जानते हैं। उसके नाम महात्म्य कथाएँ पुराणों से लेकर काव्य, नाटक और कोष–ग्रन्थों में सर्वत्र परिव्याप्त हैं। कौटिल्य द्वारा नंद वंश के विनाश और मार्य–वंश की प्रतिष्ठा से संबंधित कथा विष्णुपुराण में मिलती है, जिसका सार इस प्रकार है–महाभदन्त और उसके नौ पुत्र 100 वर्ष तक राज्य करेंगे। अंत में कौटिल्य नामक एक ब्राह्मण उस राज्य परम्परा के अंतिम उत्तराधिकारी नंदवंश का विनाश करेगा। नंदवंश के समूल नष्ट हो जाने के बाद उसकी जगह मौर्यवंश के प्रथम प्रतापी शासक चन्द्रगुप्त का कौटिल्य राज्याभिषेक करेंगे। उसका पुत्र बिन्दुसार और बिन्दुसार का पुत्र अशोक होगा।' इससे स्पष्ट है कि मगध के राज्य सिंहासन पर पहले नंद वंश का अधिकार था और उसके बाद कौटिल्य ने अपने क्रोध द्वारा नंदराज के अधीन राज्य का उद्धार किया एवं मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

गुप्तकाल पर प्रकाश डालने वाली साहित्यिक सामग्री को भी अनेक भागों में विभक्त किया जा सकता है जिसको निम्नलिखित शब्दों में स्पष्ट किया जा सकता है।

पुराणों से गुप्तों के प्रारंभिक इतिहास, सीमा–निर्धारण तथा सांस्कृतिक कार्यकलापों के विषय में जानकारी मिलती है। फिर धर्मशास्त्रों से भी गुप्तकालीन धर्म, संस्कार, स्त्रियों की दशा तथा नैतिक आदर्श के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। गुप्त काल में संभवतः वृहस्पति,

व्यास, हारित, आदि स्मृतियों की रचना हुई थी। इसके साथ ही गुप्तकाल के विषय में काव्यों व नाटकों से भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

प्राचीन भारत में आदर्श राज्य के रूप में एक ऐसे शक्तिशाली राज्य की कल्पना की गयी जो समस्त देश को एक सूत्र में पिरोकर एक केन्द्रीय शासन के अंतर्गत सब राज्यों और सूबों के सहयोग से बाहरी शत्रुओं के आक्रमण से देश की रक्षा की व्यवस्था करे। इस उद्देश्य की प्राप्ति में सर्वप्रथम मौर्य साम्राज्य को सफलता मिली। शासन सुचारू रूप से केन्द्र द्वारा संचालित थी, जो उदार एवं सहनशील था। डॉ. राधाकमल मुखर्जी ने मौर्यकालीन राज्य को विश्व का सर्वप्रथम धर्मनिरपेक्ष लोक–कल्याणकारी राज्य कहा है। शासन का यह सामाजिक कर्तव्य था कि जो दास–भृत्य, बंधु, पुत्र आदि अपने गृहस्वामी की आज्ञा का पालन न करे तो उन्हें वह दण्डित करने के बजाय विनीत करे। उस समय सामाजिक कर्तव्यों के पालन पर बल दिये जाने की कोशिश की जाती थी। बाल, वृद्ध, व्याधिग्रस्त, अनाथ पुरूष एवं स्त्रियों और उनके बच्चों की रक्षा की व्यवस्था राजा के द्वारा किया जाता था। डॉ. राधाकुमुट मुकर्जी के अनुसार, ''देश की भौतिक एवं नैतिक प्रगति का मुख्य कारण सुस्थिर राजनीतिक दशा थी।'' गुप्तकाल के विशाल साम्राज्य तथा देश के विशाल भू–भाग में प्रचलित लगभग एक सी शासन पद्धति ने संस्कृति तथा सभ्यता की उन्नति को उपयुक्त वातावरण प्रदान किया। गुप्त राजाओं का विशाल साम्राज्य, उनकी सुदृढ़ एवं उदार शासन नीति तथा उनकी गुण, ग्राहकता और विद्धानों तथा कवियों को राज्याश्रय प्रदान करने की प्रवृति के कारण देश में कला, साहित्य, संस्कृति, आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति और व्यवस्था, कुशल और व्यवस्थित प्रशासनिक और क्षेत्रों में अभूतपूर्व उन्नति हुई। गुप्त राजाओं ने देश में आंतरिक शांति एवं सुरक्षा के लिए पुलिस विभाग था। इस विभाग का सर्वोच्च अधिकारी 'दण्डपाशिक' होता था। शासन की सुविधा के लिए गुप्त–साम्राज्य अनेक इकाइयों में बंटा हुआ था। सबसे बड़ा विभाग प्रांत था, जिनको देश या 'भुक्ति' कहते थे। प्रांतीय शासक 'भोगपति' कहलाते थे। प्रांतों के बाद 'क्षेत्र प्रदेश' आता था जो आज की कमिश्नरी के बराबर होता था और इससे छोटा विभाग 'विषय' कहलाते थे जो जिले के समकक्ष होता था। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई 'ग्राम' था जिसका अधिकारी 'ग्रामिक' था। ग्रामिक की सहायता के लिए एक समिति होती थी जिसे 'ग्राम–सभा' कहते थे।

निष्कर्ष के तौर, गुप्त शासकों की प्रशासनिक व्यवस्था उच्चकोटि की थी और उन्होंने अपने विशाल साम्राज्य का सुचारू रूप से शासन किया। डॉ. अल्तेकर ने गुप्त प्रशासन की प्रशंसा करते हुए लिखा है, ''गुप्तकालीन शासन प्रणाली तथा उसकी उपलब्धियों के विषय में हमारे पास विस्तृत सामग्री है जिसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वह केन्द्र व प्रान्त दोनों में अत्यंत सुव्यवस्थित थीं।''

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में वैदिक काल से गुप्तकाल तक राजनीतिक विचारों की निरन्तरता एवं पूर्णता दृष्टिगोचर होता है। राजनीतिक विचारों एवं संस्थाओं का उदय तथा विकास प्राचीन भारत में विश्व के अन्य किसी भी देश बहुत पूर्व हुआ। बाद के कालों में उनका पतन भी हुआ फिर भी इन राजनीतिक विचारों और संस्थाओं की परम्परा जारी रही एवं वे सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार की एक श्रृंखला है जिसमें विश्व के अन्य देश भी प्रभावित रहे और इसका अनुशरण किया। अतः कहा जा सकताहै कि प्राचीन भारत में युगानुरूप समस्याओं एवं आकांक्षाओं से ओत–प्रोत राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ आधुनिक परिस्थितियों के लिए भी यथार्थपरक और यथोचित है।.

संदर्भ सूची :

1. ऋग्वेद–10.87.1
2. वही–10.69.10
3. हिस्ट्री ऑफ एनीसिएन्ट संस्कृत लिट्रेचर, पृष्ठ 31
4. शांतिपर्व, महाभारत, श्लोक 14,15 अ. 59-
5. रा. कु. मुखर्जी (अनु. वा. श. अग्रवाल), हिन्दू सभ्यता, 81.
6. B.A. Saletore, Ancient Indian Political Thought and Institutions, 50-54.
7. M.V. Krishna Rao, Studies in Kautilya, Introdution, i-ii.
8. N.C. Bandopadhyaya, Kautilya, 1.
9. देवदत्त शास्त्री, कौटिल्य अर्थशास्त्र, 35.
10. वही पृष्ठ।
11. अधिकरण, 15 1:1–3.
12. Beni Prasad, The State in Ancient India, 250.
13. H.N. Sinha, "The Development of Indian Polity, Page No. 125.